अपठित गद्यांश

समय : 1 घंटा **स्वतः मूल्यांकन प्रश्न—1** 25 अंक

1. **(i)** **(अ)** वह दूसरों के दोष देखता रहता है।
(ii) **(स)** ईर्ष्या के वशीभूत होकर।
(iii) **(स)** ईर्ष्या के दाहक स्वरूप में।
(iv) **(द)** आत्मनिरीक्षण करना।
(v) **(अ)** दूसरों की बुराइयों पर।

2. **(i)** **(द)** दुविधा।
(ii) **(द)** (अ) और (स) दोनों।
(iii) **(स)** आत्मविश्वासहीन होने के कारण।
(iv) **(द)** हतोत्साहित, निराशावादी, डरपोक व असफलता का मर्सिया पढ़ने वाले लोगों से।
(v) **(स)** एकाग्रता को।

3. **(i)** **(द)** (अ) और (ब) दोनों।
(ii) **(ब)** ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाले।
(iii) **(स)** जो चीज़ उनके वश में नहीं होती, वे उसे अदृश्य की इच्छा पर छोड़कर चिंता मुक्त हो जाते हैं।
(iv) **(ब)** सुख-दुख की परिकल्पना।
(v) **(स)** (अ) और (ब) दोनों।

4. **(i)** **(ब)** नारायण।
(ii) **(ब)** शेरनी का दूध मँगाकर।
(iii) **(स)** (अ) और (ब) दोनों।
(iv) **(द)** गुरु रामदास को।
(v) **(द)** अपना पूरा राज्य।

5. **(i)** **(ब)** उद्यानों का।
(ii) **(स)** चावल।
(iii) **(द)** दक्षिण-पश्चिम भाग में।
(iv) **(स)** कोलंबो।
(v) **(अ)** होपर्स।

●●

व्याकरण

समय : 1 घंटा **स्वतः मूल्यांकन प्रश्न—2** 25 अंक

1. **(i)** **(अ)** संज्ञा पदबंध।
(ii) **(अ)** तेज़ गति से चलने वाली।
(iii) **(ब)** पाँच।
(iv) **(स)** विशेषण पदबंध।
(v) **(ब)** क्रिया पदबंध।

2. **(i)** **(स)** मिश्र वाक्य।
(ii) **(अ)** तताँरा को देखते ही वामीरो फूट-फूट कर रोने लगी।
(iii) **(ब)** गायक गाना गाता है और वह साथ-साथ बाँसुरी भी बजाता है।
(iv) **(स)** मिश्र वाक्य।
(v) **(ब)** पाँच।

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

3. (i) (ब) महापुरुष।
(ii) (अ) द्वंद्व।
(iii) (स) चक्र धारण किया है जिसने।
(iv) (द) सत्याग्रह।
(v) (ब) राह खर्च।

4. (i) (ब) तूती बोलती।
(ii) (स) आँखों का तारा।
(iii) (द) पाँव उखड़ जाना।
(iv) (अ) मुट्ठी गरम करना।
(v) (स) बाएँ हाथ के खेल

5. (i) (ब) रूपक।
(ii) (अ) उपमा
(iii) (स) अतिश्योक्ति।
(iv) (ब) यमक।
(v) (अ) अनुप्रास

●●

पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-2 (गद्य खंड)

समय : 1 घंटा **स्वतः मूल्यांकन प्रश्न—3** **25 अंक**

1. (i) (ब) लेखक का।
(ii) (द) फाटक पर।
(iii) (अ) किताब लेकर बैठना।
(iv) (स) हॉस्टल में।
(v) (ब) कहाँ थे ?

2. (i) (स) दिन ढलने के काफी पहले।
(ii) (ब) वामीरो की।
(iii) (अ) लपाती।
(iv) (अ) नारियल के झुरमुट में।
(v) (ब) तताँरा की।

3. (i) (स) ग्वालियर।
(ii) (द) बिल्ली द्वारा अंडा तोड़ देने पर।
(iii) (अ) माँ के हाथ से गिरकर।
(iv) (द) उपरोक्त सभी।
(v) (ब) अंडे टूट जाने पर कबूतर को परेशान देखकर।

4. (i) (अ) बृजलाल गोयनका।
(ii) (स) झंडा लेकर।
(iii) (ब) वंदे मातरम् बोल रहा था।
(iv) (द) उसको गिरफ़्तार कर थाने में मारा-पीटा गया।
(v) (ब) 105 स्त्रियों को।

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

5. (i) (स) चो-ना-यू।
(ii) (अ) वह पर्णकुटी जैसा सुज्जित व शांत होता है।
(iii) (ब) टी-सेरेमनी में।
(iv) (स) जापानी विधि से चाय पिलाने वाले व्यक्ति ने।
(v) (अ) चायदानी के पानी का खदबदाना।

पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-2 (काव्य खंड)

समय : 1 घंटा **स्वतः मूल्यांकन प्रश्न—4** **25 अंक**

1. (i) (अ) जो प्रभु भक्ति में लीन है।
(ii) (ब) ईश्वर-प्रेम रूपी अक्षर पढ़कर।
(iii) (स) ज्ञान का।
(iv) (द) सांसारिक मोह-माया से मुक्त होना।
2. (i) (ब) पूरे जीवन दूसरों के दु:ख-दर्द को समझने वाले का।
(ii) (ब) अखंड भाव व भाई-चारा फैलाने वाले की।
(iii) (द) उपर्युक्त सभी।
(iv) (स) कविता का नाम – मनुष्यता।
3. (i) (स) बलिदान देकर शत्रु को रोकना।
(ii) (द) शत्रुओं का।
(iii) (अ) भारत-चीन युद्ध।
(iv) (स) मातृभूमि का सम्मान।
4. (i) (स) तोप पर बैठकर घुड़सवारी करते हैं।
(ii) (द) चिड़ियाँ।
(iii) (अ) शक्तिशाली व भारतीय देशभक्तों का दमन करने वाली तोप।
(iv) (स) शक्तिशाली व्यक्ति केवल ताकत के आधार पर ज़्यादा समय तक जनता का मुँह बंद नहीं कर सकता।
5. (i) (द) ये सभी।
(ii) (अ) जो सच्चे मन से ईश्वर भक्ति करते हैं।
(iii) (ब) काँच जैसा कच्चा मन।
(iv) (द) (ब) व (स) दोनों।
6. (i) (अ) चन्द्र वंश में।
(ii) (स) श्रीकृष्ण व लेखक के पिता केशवराय।
(iii) (द) श्रीकृष्ण।
(iv) (ब) लेखक के।

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-2 (वर्णानात्मक) गद्य खंड

समय : 1 घंटा **स्वत: मूल्यांकन प्रश्न—5** **24 अंक**

लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक)

1. इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक दर्शन के सार्वभौम सत्य को प्रतिपादित करता है कि हम सब परमपिता के अंश रूप हैं। हम सब मिट्टी से निर्मित हैं और मृत्यु होने पर मिट्टी में ही मिल जाएँगे। मिट्टी में मिलने पर हमारी भिन्नता समाप्त हो जाती है। यह पहचान सम्भव ही नहीं होती कि कौन किस रूप में है। अत: हमें भेदभाव को छोड़कर सबको समान रूप से समझना चाहिए और कभी भी अपने आप को किसी से श्रेष्ठ नहीं समझना चाहिए।

2. 26 जनवरी, 1931 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने में कोलकाता का योगदान बहुमूल्य था। पूरा कोलकाता आंदोलन में सम्मिलित था। मकानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराए गए थे। हर व्यक्ति घर-घर जाकर झंडा फहराने और कानून तोड़ने का महत्त्व बता रहा था। विद्यार्थीगण, महिलाएँ, व्यापारी, नेता सभी ने सभा स्थल पर कानून की परवाह किए बिना अहिंसक बनकर लाठियाँ झेलीं।

3. हमारे माता-पिता भी बड़े भाई साहब की तरह हर समय टोकते हैं, जैसे-बाहर मत जाओ, टी. वी. मत देखो, पढ़ाई पर ध्यान दो आदि। इन बातों को सुनकर मन में विरोध के भाव उठते हैं और हम अनर्गल हरकतें कर उन्हें और अधिक परेशान करते हैं क्योंकि उम्र की नादानी, अनुभवों की कमी के कारण हम उनकी बातों का महत्त्व नहीं समझ पाते। लेखक भी बड़े भाई साहब की बातों का महत्त्व नादानी के कारण नहीं समझते।

4. डॉ. दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर ही रहे थे, उनकी फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों की फोटो खींचने की हमारे विचार से दो वजहें हो सकती थीं—

(i) वे फोटो इसलिए उतरवा रहे थे जिससे कि अंग्रेज़ सरकार के कारनामों को समाचार-पत्र के माध्यम से देश के सामने ला सकें।

(ii) वे अपने द्वारा मरीजों की देखभाल की फोटो खिंचवाकर स्मृति के रूप में रखना चाहते थे कि उन्होंने जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख की थी।

5. 'डायरी का एक पन्ना' पाठ को पढ़कर हमें यह संदेश मिलता है कि देश के सम्मान को सर्वोपरि समझना चाहिए। इसके लिए कष्ट सहने को भी तैयार रहना चाहिए। विदेशी शासन की क्रूरता से हमें घबराना नहीं चाहिए, हम जिस काम को करने का निश्चय कर लें उसे पूरा करके ही दम लेना चाहिए। यह पाठ हमें देश प्रेम और त्याग भावना का संदेश देता है।

6. इस पाठ का प्रतिपाद्य है—फिल्मकार निर्माता शैलेन्द्र द्वारा निर्मित 'तीसरी कसम' नामक फिल्म की विशेषता बताना। इसके माध्यम से वे कला-फिल्मों को प्रोत्साहन देना चाहते हैं। वे कहना चाहते हैं कि फिल्मों में गहरी कलात्मकता और संवेदना होनी चाहिए। अच्छे फिल्म निर्माता को लोक रुचि के साथ-साथ लोक-संस्कार का धर्म भी निभाना चाहिए।

निबंधात्मक प्रश्न (प्रत्येक 4 अंक)

1. वज़ीर अली अंग्रेजों से नफ़रत करता था तथा उनका कट्टर विरोधी था। अंग्रेज़ों को भारत से निकालना उसका एकमात्र लक्ष्य था। इसके लिए उसने अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-ज़मा को भारत पर आक्रमण करने का न्यौता दिया। उसने सारे भारत वर्ष में अंग्रेज़ों के खिलाफ़ वातावरण बना दिया था। अंग्रेज़ों का पक्ष लेने वालों को वह अपना शत्रु समझता था। इसी कारण उसने कंपनी के वकील की हत्या कर दी। वह सआदत अली को अवध की गद्दी से हटाना चाहता था और स्वयं उस पर कब्जा करना चाहता था ताकि वहाँ से अंग्रेज़ों को निकाल सके।

2. गांधी जी में नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता थी, उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि इस प्रकार कर सकते हैं—

(i) सर्वप्रथम गांधी जी ने नेतृत्व क्षमता का उदाहरण दक्षिण-अफ्रीका की यात्रा के दौरान प्रदर्शित किया। वहाँ रंग-भेद नीति के विरुद्ध आंदोलन खड़ा करके सरकार को भी अपने कानून बदलने के लिए मजबूर कर दिया था।

(ii) भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव उन्होंने अहिंसा नीति के माध्यम से हिला कर रख दी थी। सन् 1942 के "अंग्रेजों भारत छोड़ो" आन्दोलन में गांधी जी की नेतृत्व क्षमता का परिचय प्राप्त होता है।

(iii) सत्याग्रह आन्दोलन, बहिष्कार कार्यक्रम, दाण्डी यात्रा आदि आंदोलन गाँधी जी के नेतृत्व में पूर्ण हुए। जिसके

परिणामस्वरूप अंत में हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई, जो प्रत्यक्ष रूप से गांधी जी की नेतृत्व क्षमता का परिचायक है।

3. 'बड़े भाई साहब' पाठ के आधार पर छोटे भाई का व्यक्तित्व इस प्रकार है–
छोटा भाई चंचल स्वभाव का है। उसका मन पढ़ाई में कम, खेलने में ज्यादा लगता है। वह एक प्रतिभावान छात्र है, वह कम समय में ही अच्छी तरह अध्ययन कर लेता है। अपने बड़े भाई का सदैव सम्मान व आदर करता है तथा उन के प्रति सहानुभूति व श्रद्धा का भाव रखता है। छोटा भाई अपने बड़े भाई की बातों को विवेक पूर्वक सुनता है और उसका पालन भी करता है। गलती हो जाने पर वह तुरंत मान लेता है। अपने बड़े भाई साहब से किसी भी बात को लेकर बहस नहीं करता।

●●

पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-2 (वर्णानात्मक) काव्य खंड

समय : 1 घंटा

स्वतः मूल्यांकन प्रश्न—6

24 अंक

लघु उत्तरीय प्रश्न

(प्रत्येक 2 अंक)

1. बिहारी के इस दोहे में हमें यह संदेश दिया गया है कि माला, छापा, तिलक-धारण करने से एक काम भी पूरा नहीं होता। जिनका मन कच्चे काँच की तरह है, वे व्यर्थ में भटकते हैं। सच्चे व अच्छे लगने वाले राम को अपने मन में धारण करो, उसी से सारे काम पूरे होंगे।
2. कबीर कहते हैं कि जैसे कस्तूरी मृग की नाभि में ही स्थित रहती है लेकिन अपनी अज्ञानतावश वह इस तथ्य को नहीं जानता और उसे जंगल-जंगल ढूँढ़ने लगता है, उसी प्रकार ईश्वर हमारे हृदय में स्थित है परन्तु अज्ञानता, अविश्वास व अहंकारवश हम उसे अनुभव नहीं कर पाते और मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या अन्य तीर्थ स्थलों में ही ढूँढ़ते रह जाते हैं।
3. किसी भी सच्चे भक्त के लिए सबसे बड़ी जागीर है—उसका भगवान। भगवान को पाने का सर्वोत्तम साधन है—भक्ति। मीरा भावपूर्ण भक्ति की उपासिका थीं। उसी के माध्यम से वे अपने कृष्ण को पा सकती थीं। इसलिए भाव-भक्ति उनके लिए जागीर के समान थी।
4. कवि ने मानव मन की उच्चाकांक्षा पर यह व्यंग्य किया है कि उच्चाकांक्षा वाले व्यक्ति पहाड़ी पेड़ों की तरह हमेशा कुछ चिंतित, मौन, खोए से प्रतीत होते हैं तथा वे हमेशा ऊँचा उठने की कामना से व्यग्र रहते हैं। वे प्रसन्न नहीं रह पाते। वे अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति में ही व्याकुल व व्यस्त रहते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न

(प्रत्येक 4 अंक)

1. कम्पनी बाग में 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में काम आई एक तोप रखी हुई है। उसे विरासत की तरह सँभाल कर रखा गया है। मानो वह सैलानियों को बताती है कि उसने कैसे-कैसे वीरों की धज्जियाँ उड़ाई थीं परन्तु आज उसका अस्तित्व केवल इतना है कि छोटे बच्चे निडर होकर उस पर सवारी करते हैं या चिड़ियाँ गपशप करती हैं। कभी-कभी गौरेये उसके भीतर भी घुस जाते हैं। वे मानो बताते हैं कि तोप चाहे कितनी भी बड़ी हो उसे एक ना एक दिन चुप होना ही पड़ता है। क्योंकि शस्त्र-शक्ति और दमन के आधार पर जनता को कुछ समय के लिए ही दबाया जा सकता है परन्तु जब जनता विद्रोह पर आती है तो बड़ी से बड़ी तोप का भी मुँह बंद करवा देती है। 1857 की रखी इस तोप ने अपने समय कितने ही शूरवीरों को उड़ाया हो पर अंततः उसका भी मुँह बंद हो गया क्योंकि प्रत्येक का मूल्य व शक्ति एक दिन समाप्त हो ही जाती है।
2. 'आत्मत्राण' कविता में कवि की आकांक्षा सामान्य लोगों की आकांक्षा से भिन्न है। सामान्य रूप से लोग ईश्वर से दु:खों को दूर करने की प्रार्थना करते हैं पर इस कविता में कवि दु:खों से विचलित न होकर अपने बुद्धि-बल और साहस के बल पर कठिनाइयों से त्राण पाना चाहता है। वह ईश्वर से इतनी शक्ति चाहता है कि विपत्तियाँ, हानि, धोखा सहन कर पाए। उसका ईश्वर पर सदैव विश्वास बना रहे। सुख-दु:ख को समभाव से वहन कर सके। कवि ने जीवन में संघर्ष करने की शक्ति की कामना की है। क्योंकि आत्मसंघर्ष करके, संकटों से जूझकर ही विजय प्राप्त की जा सकती है। अत: वह ईश्वर से स्वयं को समर्थ बनाने की प्रार्थना करता है ताकि वह आत्मनिर्भर बनकर जिए।
3. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से मनुष्य मानवता, एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा आदि गुणों को अपने जीवन में अपना सकते हैं। मनुष्य को स्वार्थ, भिन्नता, वर्गवाद, जातिवाद आदि संकीर्णताओं से मुक्त होकर स्वयं में उदारता के भाव

भरने चाहिए। हर मनुष्य को समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करनी चाहिए। वह दुखियों, वंचितों और जरूरत मंदों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को भी तैयार होना चाहिए। उसे कर्ण, दधीचि, रंतिदेव आदि के अतुल त्याग से प्रेरणा लेनी चाहिए। वह अपने मन में करुणा का भाव जगाए और अभिमान, लालच तथा अधीरता का त्याग करे। एक-दूसरे का सहयोग करके देवत्व को प्राप्त करे। वह हँसता-खेलता जीवन जिए तथा आपसी मेल-मोल बढ़ाने का प्रयास करे। उसे किसी भी सूरत में अलगाव और भिन्नता को हवा नहीं देनी चाहिए।

4. 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने चीन के युद्ध में सीमाओं पर लड़ने वाले सैनिकों द्वारा 'साथियो' शब्द भारत-वर्ष के देशवासियों (युवा पीढ़ी) के लिए संबोधित किया गया है और उनसे अपेक्षा की गई है कि वे तो संसार छोड़कर जा रहे है और अब देश की रक्षा का उत्तरदायित्व उन पर है। हिमालय देश का मुकुट है, इसलिए अपने सिर भले ही कट जाएँ, परंतु हिमालय का सिर नहीं झुकना चाहिए। मातृभूमि पर हँसते-हँसते न्योछावर हो जाएँ। संकट की घड़ी में अपने सुखों को, स्वार्थों को छोड़कर देशसेवा में समर्पित हो जाएँ। वे देश की रक्षा व स्वाभिमान की सुरक्षा करें। उसके लिए हर समय स्वयं का बलिदान देने के लिए तत्पर रहें। वे एक के बाद एक बलिदानी काफिले तैयार करते रहें ताकि सीमा पार से कोई भी शत्रु रावण रूप में, हमारी सीता रूपी मातृभूमि को छूने की भी हिम्मत न कर सके।

●●

लेखन

समय : 1 घंटा | **स्वतः मूल्यांकन प्रश्न—6** | **26 अंक**

1. **AI परोपकार का महत्त्व**

संकेत-बिन्दु—● परोपकार का अर्थ ● परोपकार से लाभ ● परोपकारी व्यक्तियों के उदाहरण ● उपसंहार।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परस्पर सहयोग उसके जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। परस्पर सहयोग के अभाव में समाज का अस्तित्व ही नहीं रह जाता। व्यक्ति को पग-पग पर दूसरों के सहयोग और सहायता की आवश्यकता पड़ती है। व्यासजी ने कहा है, "परहित साधन ही पुण्य है और दूसरों को कष्ट देना ही पाप है।" परोपकार के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है। परोपकार पर प्रत्यक्ष उदाहरण प्रकृति में देखने को मिलता है, मेघ दूसरों के लिए वर्षा करते हैं, वायु दूसरों के लिए चलती है तथा सरिता दूसरों की प्यास बुझाने के लिए बहती है। पुष्प अपनी सुगंध बिखेर कर, वृक्ष स्वयं धूप सहकर और पथिकों को छाया प्रदान करके हमें परोपकार करने की प्रेरणा देते प्रतीत होते हैं, परोपकार करने वाला मनुष्य पूज्य बन जाता है। परहित के कारण गाँधीजी ने गोलियाँ खाईं, सुकरात ने जहर पिया तथा राजा शिवि ने बाज के आक्रमण से भयभीत कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का माँस दे दिया। महर्षि दधीचि ने मानव-कल्याण के लिए स्वेच्छा से अपनी अस्थियाँ दान करके संपूर्ण मानवता को वृत्रासुर के अत्याचारों से मुक्त कराया। बुद्ध, महावीर जैसे महापुरुषों ने तप्त मानवता को परोपकार का पावन मार्ग दिखाया। पंचशील का सिद्धांत भी परोपकार की ही देन है। हमारा कर्तव्य है कि हम इन उपकारी महापुरुषों के जीवन का अनुकरण करें। यही हमारे जीवन का सबसे बड़ा धर्म है। परंतु हमें यह परोपकार केवल सेवा की भावना से ही करना चाहिए। परोपकार करते समय तो हमें यह अभिमान भी नहीं होना चाहिए कि हमने किसी व्यक्ति के लिए यह कोई भलाई कार्य किया। नि:स्वार्थ भाव से हमें परोपकार के कार्यों में समय लगाना चाहिए।

2. सेवा में,
प्रबंधक महोदय,
दिल्ली विद्युत बोर्ड,
दिल्ली।
दिनांक 12 दिसंबर 20XX

विषय—बिजली की समस्या के संबंध में।

मान्यवर महोदय,
मैं शोभित सिंह चंदन नगर से क्षेत्र का निवासी हूँ, यहाँ की सुधार समिति का अध्यक्ष हूँ। इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान इस क्षेत्र में बिजली की अपर्याप्त आपूर्ति तथा उसे बार-बार चले जाने की समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में बिजली के बार-बार जाने तथा अनियमित आपूर्ति के कारण यहाँ के निवासियों को बहुत असुविधा हो रही है। इसके कारण विद्यार्थियों को विशेष रूप से बहुत बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। लगभग दो महीने बाद उनकी परीक्षाएँ आरंभ होने वाली हैं। परीक्षा की तैयारी का यही समय सबसे उपयुक्त है। इस समय बिजली की अनियमित आपूर्ति का दुष्प्रभाव उनकी परीक्षा

पर पड़ना स्वाभाविक है। आपसे अनुरोध है कि इस क्षेत्र के निवासियों की इस समस्या की ओर ध्यान दें तथा बिजली की आपूर्ति को ठीक कराने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

शोभित सिंह

3.

अ.ब.स. विद्यालय

अ.ब.स. नगर, उ.प्र.

सूचना

निबंध प्रतियोगिता के आयोजन हेतु

दिनांक : 25/9/20XX

विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं को यह जानकर हर्ष होगा कि हमारे विद्यालय में गाँधी जयन्ती के उपलक्ष्य में, निबंध-प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वालों को पुरस्कार भी दिया जाएगा। इच्छुक छात्र-छात्राएँ अपना नाम 30 सितम्बर तक अपने कक्षाध्यापक को दे दें।

दिनांक व समय निम्न हैं—

दिनांक : 2 अक्टूबर, 20XX

समय : 9 A.M. से 2 P.M.

राजन वर्मा

(हैड-बॉय)

4.

केश शैम्पू

* इसमें हैं वे सारे तत्व
* जो बालों को पोषण दें।
* जो उन्हें झड़ने से रोके।
* लम्बा, घना और काला बनाए।
* रूसी की समस्या से छुटकारा पाए।
* पहले इस्तेमाल करें, फिर विश्वास करें।
* आज ही घर लाएँ।

5. उज्जयिनी के मार्ग में पाकड़ का एक पेड़ था। उस पर एक हंस और एक कौआ, दोनों साथ-साथ रहते थे। दोनों अलग-अलग प्रवृत्ति के थे। हंस दयालु प्रवृत्ति का था तो कौआ धूर्त व कुटिल प्रवृत्ति का था। परन्तु साथ रहते-रहते उनमें मित्रता हो गई थी। गर्मी के दिनों की बात है—उस दिन एक राहगीर दोपहर के समय थका-हरा वहाँ पहुँचा। पाकड़ की घनी छाया देखकर वह अपने धनुष-बाण एक ओर रखकर सो गया।

तीसरा पहर आते-आते छाया उसके मुख पर से हट गई। तीखी धूप उसके चेहरे पर पड़ने लगी। पेड़ पर बैठे हंस ने देखा, तो उसको राहगीर पर दया आ गई। उसने छाया करने के लिए अपने डैने फैला दिए।

राहगीर गहरी नींद में सोता रहा। सोते समय उसका मुँह खुला रह गया। कौए की कुटिल दृष्टि उस पर पड़ी। कौआ तो पराया सुख देख ही नहीं सकता। उसने पेड़ पर से राहगीर के मुँह पर बीट कर दी। बीट पड़ते ही पथिक हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने ऊपर देखा कि हंस पंख फैलाए बैठा है, वह यही समझा कि बीट हंस ने ही की है। बस फिर क्या था, उसने आव देखा न ताव, अपना धनुष उठाया और हंस पर बाण चला दिया। बेचारे हंस का काम-तमाम हो गया और कौआ अपनी कुटिलता में सफल हो गया। उसे हंस की अच्छाई से कोई मतलब नहीं था और न ही उसे हंस के साथ उसकी मित्रता की याद आई। उसका जैसा धूर्त स्वभाव था, उसने वैसा ही कार्य किया।

सीख—धूर्त से मित्रता करना मूर्खता है।

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE